Original Article
ISSN (Online): 2582-7472

ShodhKosh: Journal of Visual and Performing Arts
May 2024 5(5), 1157–1164

FOLK PERFORMING ARTS AND VISUAL EXPRESSIONS OF THE RAMAYANA

लोक प्रदर्शनकारी कलाएं और रामकथा की दृश्य अभिव्यक्तियां

Neelam Rathi [1]

[1] Professor and Head, Hindi Department, Aditi Mahavidyalaya, University of Delhi, Delhi-110039, India

ABSTRACT

English: This research paper explains the folk performing forms of the Ramayana, where this story emerged from religious texts and became a tradition in every village. The Ramayana was brought to the people through mediums like Ramlila, Pandavani, Nautanki, Bhavai, Kathakali and folk singing and dancing. Paintings and paintings also served to tell the story for those who could not read. Every region adopted the Ramayana according to its dialect, music and art. The research also states that in modern times, digital staging and the growing influence of media have posed many challenges to these folk arts. Despite this, some artists and institutions are engaged in saving these traditions. This study explains the cultural importance of Ram Katha, its role in folk arts and the need for preservation. The entire research makes it clear that Ram Katha is not just a religious story but is the cultural identity of the society, which needs to be promoted.

Hindi: इस शोध पत्र में रामकथा के लोक प्रदर्शनकारी रूपों को समझाया गया है, जहाँ यह कथा धार्मिक ग्रंथों से निकलकर गाँव-गाँव की परंपरा बन गई। रामलीला, पांडवानी, नौटंकी, भवाई, कथकली और लोक गायन-नृत्य जैसे माध्यमों से रामकथा को लोगों तक पहुँचाया गया। चित्रकला और पटचित्रों ने भी उन लोगों के लिए कथा कहने का काम किया जो पढ़ नहीं सकते थे। हर क्षेत्र ने अपनी बोली, संगीत और कला के हिसाब से रामकथा को अपनाया। शोध में यह भी बताया गया है कि आधुनिक समय में डिजिटल मंचन और मीडिया के बढ़ते प्रभाव से इन लोककलाओं के सामने कई चुनौतियाँ खड़ी हुई हैं। इसके बावजूद कुछ कलाकार और संस्थाएँ इन परंपराओं को बचाने में लगे हैं। यह अध्ययन रामकथा के सांस्कृतिक महत्व, लोक कलाओं में उसकी भूमिका और संरक्षण की जरूरत को स्पष्ट करता है। पूरे शोध से यह समझ आता है कि रामकथा सिर्फ एक धार्मिक कथा न होकर समाज की सांस्कृतिक पहचान है, जिसे आगे बढ़ाना जरूरी है।

Keywords: Ram Katha, Folk Arts, Folk Dance, Folk Singing, Painting, Ramleela, Cultural Heritage, Cultural Identity, Folk Tradition, Traditional Performance रामकथा, लोककलाएँ, लोकनृत्य, लोक गायन, चित्रकला, रामलीला, सांस्कृतिक धरोहर, सांस्कृतिक पहचान, लोक परंपरा, पारंपरिक मंचन

Corresponding Author

Neelam Rathi, nrathi@aditi.du.ac.in

DOI
10.29121/shodhkosh.v5.i5.2024.5022

Funding: This research received no specific grant from any funding agency in the public, commercial, or not-for-profit sectors.

Copyright: © 2024 The Author(s). This work is licensed under a Creative Commons Attribution 4.0 International License.

With the license CC-BY, authors retain the copyright, allowing anyone to download, reuse, re-print, modify, distribute, and/or copy their contribution. The work must be properly attributed to its author.

OPEN ACCESS

1. प्रस्तावना

हमारे देश में कहानियाँ सिर्फ किताबों में नहीं रहीं, लोग उन्हें बोलकर, गाकर और दिखाकर आगे बढ़ाते रहे हैं। रामकथा ऐसी ही एक कहानी है, जो गाँव-गाँव में अलग-अलग तरीके से लोगों तक पहुँचती रही। जब पढ़ने की सुविधा नहीं थी, तब रामलीला, नौटंकी, पांडवानी और भवाई जैसे मंचों पर यह कथा सुनाई जाती थी (भारत सरकार, 2022)। कहीं लोग नाचते-गाते हुए राम के वनवास और रावण वध की कहानी सुनते थे तो कहीं कपड़ों और दीवारों पर बनाए गए चित्रों से यह कथा समझी जाती थी (राजपूत, 2019)। हर राज्य में इसे कहने का तरीके अलग था। उत्तर भारत में रामलीला शहर रही, तो दक्षिण भारत में कथकली और भरतनाट्यम जैसे नृत्य में रामकथा को पेश किया गया। असम, गुजरात और बंगाल जैसे राज्यों में लोकगीतों और नाटकों के जरिए यह कहानी लोगों तक पहुँची। ये सब तरीके लोगों के अपने थे, जिनमें उनकी बोली, पहनावा और रहन-सहन भी जुड़ा होता था। रामकथा उनके लिए कोई दूर की धार्मिक बात नहीं थी, वो उनके रोज के जीवन का हिस्सा बन गई थी।

अब समय बदल गया है। पहले जैसे गाँव के मैदान में रामलीला के मंच सजते थे, वैसे अब कम ही देखने को मिलते हैं (मनोहर, 2023)। लोग टीवी, मोबाइल और सोशल मीडिया पर ज्यादा ध्यान देने लगे हैं। कलाकारों को भी अब पहले जैसी इज्जत और मदद नहीं मिलती। कई जगह तो रामकथा सुनाने वाले लोग नई पीढ़ी के साथ इस परंपरा को छोड़ते जा रहे हैं। पर कुछ लोग और संस्थाएँ अब भी कोशिश कर रही हैं कि ये बातें खत्म न हों। सोशल मीडिया का इस्तेमाल करके कई कलाकार अपने गाँव की कला को दुनिया के सामने ला रहे हैं। स्कूलों और कॉलेजों में भी अगर इन लोककलाओं को जगह दी जाए तो बच्चे इन्हें समझ पाएँगे। रामकथा और लोककलाएँ केवल पुराने जमाने की चीजें नहीं हैं। जब कोई कलाकार मंच पर खड़ा होकर रामकथा सुनाता है या कोई चित्रकार पटचित्र बनाता है, तो वो सिर्फ एक कहानी नहीं कहता, वो अपनी पहचान और समाज की परंपरा को जिंदा रखता है। यही वजह है कि इन कलाओं को बचाना जरूरी है, ताकि आने वाली पीढ़ी भी जान सके कि उनकी संस्कृति कितनी समृद्ध है।

2. भारतीय लोक प्रदर्शनकारी कलाओं की अवधारणा

भारतीय लोक प्रदर्शनकारी कलाएँ सदियों से समाज की सामूहिक चेतना और सांस्कृतिक अभिव्यक्ति का माध्यम रही हैं, जहाँ धार्मिक विश्वास, सामाजिक मूल्य और लोक परंपराएँ सहज रूप में संप्रेषित होती हैं (सिंह, 2018)। ये कलाएँ केवल मंचीय प्रस्तुतियाँ न होकर ग्राम्य जीवन की धड़कन हैं, जो जनमानस की भाषा, प्रतीकों और विश्वासों के माध्यम से जीवंत संवाद स्थापित करती हैं। लोक नाट्य, नौटंकी, भवाई, पांडवानी जैसे प्रदर्शन रूपों में धार्मिक आख्यानों, विशेषकर रामकथा, को जिस तरह स्थान मिला है, वह दर्शाता है कि इन कलाओं ने न केवल मनोरंजन, साथ में नैतिक शिक्षा और सामाजिक एकता को भी बल प्रदान किया है। इनमें शास्त्रीय कलाओं जैसी जटिलता न होकर सरलता, भावप्रवणता और दर्शकों से प्रत्यक्ष संवाद की परंपरा रही है। लोक कलाकार अपने अनुभवजन्य ज्ञान और परंपरागत शैली के साथ धार्मिक कथाओं को इस प्रकार प्रस्तुत करते हैं कि गूढ़ विषयवस्तु भी सहज रूप में लोकमानस तक पहुँचती है। इस प्रक्रिया में दृश्य और श्रव्य दोनों माध्यमों का प्रयोग होता है, जिससे प्रस्तुति अधिक प्रभावशाली बनती है। उदाहरण के लिए, नीचे दी गई चित्र इस बात की पुष्टि करती हैं:

चित्र 1: फूल नौटंकी विलास" नाटक का मंचन

[स्रोत: संस्कृति मंत्रालय, भारत सरकार, 2022]

यही कारण है कि लोक प्रदर्शनकारी कलाएँ सामाजिक-सांस्कृतिक स्थायित्व की संवाहक बनीं और धार्मिक आख्यानों के प्रचार-प्रसार में अनिवार्य भूमिका निभाती रहीं (Singh, 2017)।

इन लोक कलाओं की विशेषता उनके समय और स्थान के अनुसार लचीलेपन में रही है। प्रत्येक क्षेत्र ने अपनी लोकभाषा, प्रतीकों और सामाजिक सरोकारों के अनुरूप इनकी विशिष्ट पहचान स्थापित की। उत्तर भारत में रामलीला, पश्चिम में भवाई और मध्य भारत में पांडवानी ने धार्मिक आख्यानों को जीवंत किया (भारत सरकार, 2022)। चित्रकला और पटचित्रों में रामकथा के प्रसंगों ने लोक सौंदर्यबोध और धार्मिक भावना का संगम प्रस्तुत किया। इन कलाओं के माध्यम से पौराणिक कथाएँ ग्रंथों से निकलकर लोकजीवन का हिस्सा बनीं और पीढ़ी दर पीढ़ी मूल्यों का संप्रेषण संभव हुआ। इस प्रकार लोक प्रदर्शनकारी कलाएँ सांस्कृतिक निरंतरता और सामाजिक संवाद की वाहक बनीं।

3. रामकथा: एक सांस्कृतिक और धार्मिक दृष्टिकोण

भारतीय सभ्यता में रामकथा केवल एक पौराणिक आख्यान न होकर सांस्कृतिक चेतना का अभिन्न स्रोत रही है, जिसने समाज के नैतिक और धार्मिक संरचनाओं को दिशा प्रदान की है। यह कथा विभिन्न युगों में बदलते सामाजिक संदर्भों के साथ जनमानस में इस प्रकार रची-बसी कि जीवन-मूल्यों की व्याख्या का आधार बन गई। वाल्मीकि द्वारा रचित संस्कृत रामायण से लेकर लोकभाषाओं में विकसित विविध संस्करणों तक, रामकथा ने न

केवल धार्मिक आस्था को पोषित किया, साथ में सामाजिक आदर्शों की स्थापना भी की (सिंह, 2022)। कंबन की कंब रामायण हो या कृतिवास का कृतिवासी रामायण, प्रत्येक क्षेत्रीय रूपांतरण ने स्थानीय समाज की संवेदनाओं के अनुरूप रामकथा को नया आयाम दिया। यही कारण है कि रामकथा उत्तर से दक्षिण और पूर्व से पश्चिम तक सांस्कृतिक एकता का सूत्र बनी रही, जहाँ प्रत्येक समाज ने इसे अपनी भाषिक, कलात्मक और धार्मिक अभिव्यक्ति का माध्यम बनाया (नारंग, 2023)।

रामकथा का प्रभाव केवल ग्रंथों तक सीमित न रहकर लोक परंपराओं में इसकी गूंज स्पष्ट रूप से दिखाई देती है। उत्तर भारत की रामलीला, दक्षिण भारत का कथकली, असम की अंकिया नाट, और छत्तीसगढ़ की पांडवानी जैसी परंपराओं ने इस कथा को जीवंत मंच प्रदान किया (भारत सरकार, 2022)। इन विविध मंचों पर रामकथा का प्रस्तुतिकरण यह दर्शाता है कि कैसे एक धार्मिक आख्यान सामाजिक संवाद का हिस्सा बन गया। एक अध्ययन के अनुसार, भारत के 15 प्रमुख राज्यों में प्रति वर्ष लगभग 6,500 से अधिक लोकमंचों पर रामकथा आधारित प्रस्तुतियाँ होती हैं, जिनमें ग्रामीण और शहरी दोनों क्षेत्रों की सहभागिता देखी जाती है। यह सांस्कृतिक उपस्थिति केवल धार्मिक उत्सव का संकेत न होकर सामूहिक सांस्कृतिक स्मृति के सतत पुनर्पाठ का प्रतीक है।

सारणी 1 : रामकथा की सांस्कृतिक भूमिका

सारणी 1 : रामकथा की सांस्कृतिक भूमिका		
क्षेत्रीय स्वरूप	प्रस्तुति का माध्यम	सांस्कृतिक भूमिका
अयोध्या, काशी	रामलीला	धार्मिक अनुष्ठान और सामाजिक समागम
केरल	कथकली	नृत्य-नाट्य में प्रतीकात्मक अभिव्यक्ति
असम	अंकिया नाट	भक्ति आंदोलन का प्रभाव
छत्तीसगढ़	पांडवानी	कथा-वाचन और जनसंघर्ष की अभिव्यक्ति
मेवाड़, कांगड़ा	चित्रकला	दृश्य माध्यम में सांस्कृतिक संरक्षण

[स्रोत: (राजपूत, 2019)]

इस तालिका से स्पष्ट है कि रामकथा ने भारतीय समाज में केवल धार्मिक भावना को ही नहीं साथ में सामाजिक संरचना और सांस्कृतिक संवाद को भी गहराई प्रदान की। अयोध्या और काशी की रामलीला में जहाँ धार्मिक आस्था का केंद्र दिखाई देता है, वहीं छत्तीसगढ़ की पांडवानी में यह कथा लोकचेतना और सामाजिक संघर्ष का स्वरूप ले लेती है। इसी प्रकार, केरल का कथकली इस आख्यान को रंगों, मुद्राओं और नृत्य के माध्यम से प्रतीकात्मक भाषा में प्रस्तुत करता है।

आंकड़ों का विश्लेषण यह भी दर्शाता है कि रामकथा आधारित प्रस्तुतियाँ उन क्षेत्रों में अधिक सघन हैं, जहाँ लोकपरंपराएँ अभी भी सांस्कृतिक जीवन का प्रमुख हिस्सा हैं। उदाहरणस्वरूप, उत्तर भारत के ग्रामीण क्षेत्रों में रामलीला समितियों की संख्या लगातार बढ़ रही है, जबकि शहरी क्षेत्रों में इनका स्वरूप बदलते मीडिया माध्यमों के अनुरूप ढल रहा है (मनोहर, 2023)। इससे यह स्पष्ट होता है कि रामकथा की प्रासंगिकता समय के साथ नए आयाम ग्रहण करती रही है। रामकथा की यह सांस्कृतिक यात्रा, जो विभिन्न लोक कलाओं के माध्यम से समाज में जीवंत बनी रही, यह संकेत देती है कि यह केवल धार्मिक ग्रंथों का विषय न होकर जनजीवन की धड़कन है, जिसे लोक कलाकारों ने अपने माध्यम से समय-समय पर पुनः परिभाषित किया है।

4. रामकथा में लोक कलाओं की भूमिका और महत्व

भारतीय लोक परंपरा में रामकथा का विस्तार केवल धार्मिक ग्रंथों तक सीमित नहीं रहा, बल्कि लोक कलाओं ने इसे जन-जन तक पहुँचाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। जब ग्रंथीय ज्ञान सीमित वर्ग तक ही उपलब्ध था, तब लोकनाट्य, गीत, चित्रकला और नृत्य इस कथा को व्यापक समाज से जोड़ने का माध्यम बने। उत्तर भारत की रामलीला, छत्तीसगढ़ की पांडवानी, गुजरात की भवाई और केरल के कथकली जैसी विधाओं ने रामकथा को केवल मनोरंजन नहीं, बल्कि सामाजिक संवाद और नैतिक शिक्षा का माध्यम बनाया। इन कलाओं की विशेषता यह रही कि प्रत्येक क्षेत्र ने अपनी भाषा, संस्कृति और परंपराओं के अनुरूप रामकथा को नया रूप दिया। मेवाड़ और कांगड़ा की चित्रकला में रामकथा के दृश्य सांस्कृतिक स्मृति के दस्तावेज़ बने, जबकि असम के अंकिया नाट में भक्ति आंदोलन की छाप दिखाई देती है (सिंह, 2018)। लोक कलाकारों ने रामकथा को स्थिर आख्यान न रहने देकर समय और समाज की आवश्यकताओं के अनुसार परिवर्तित किया। यही कारण है कि ये कलाएँ आज भी समाज में प्रासंगिक बनी हुई हैं और सांस्कृतिक विरासत के संरक्षण में अपनी भूमिका निभा रही हैं।

5. मुख्य लोक कलाएँ और रामकथा

रामकथा के व्यापक प्रसार में जिन लोक कलाओं ने केंद्रीय स्थान प्राप्त किया है, उनमें रामलीला, पांडवानी, नौटंकी, भवाई, अंकिया नाट, कथकली और विविध चित्रशैलियाँ उल्लेखनीय हैं। अयोध्या और वाराणसी की गलियों में गूँजती रामलीला की ध्वनि केवल धार्मिक अनुष्ठान न होकर जनसमूह की

सामाजिक चेतना का प्रतीक बन चुकी है, जहाँ हर पात्र लोकजीवन के आदर्शों को सजीव करता है (भारत सरकार, 2022)। छत्तीसगढ़ की पांडवानी में स्वर और वाचन के माध्यम से जब रामकथा के प्रसंग गाए जाते हैं तो वहाँ कथा केवल श्रवण का विषय नहीं रह जाती, वह लोक संघर्ष और जीवन के मूल्यों की अनुभूति बन जाती है। उत्तर भारत की नौटंकी में रामकथा के प्रसंगों को जिस नाटकीयता और व्यंग्य के साथ प्रस्तुत किया गया है, उसने इसे जनमानस के दैनिक सरोकारों से जोड़ दिया है। गुजरात की भवाई में जब सामाजिक विषयों के साथ रामकथा के तत्व पिरोए जाते हैं तो दर्शक केवल कथा नहीं देखते। क्योंकि उसमें अपने समय की वास्तविकताओं का सामना करते हैं। असम का अंकिया नाट भक्ति आंदोलन की भावनाओं के साथ रामकथा को रंगमंच पर उतारता है, जहाँ प्रतीक और संगीत मिलकर एक आध्यात्मिक अनुभव का सृजन करते हैं (सिंह, 2018)। दक्षिण भारत में कथकली की मुद्राओं और रंगों के माध्यम से रामकथा ने दृश्य भाषा में ऐसी पहचान बनाई है, जो शाब्दिक सीमाओं को लांघकर भावप्रवणता में परिवर्तित हो जाती है। इसके अतिरिक्त मेवाड़ और कांगड़ा की चित्र शैलियों में उकेरे गए रामकथा के दृश्य केवल चित्र नहीं हैं, वे सांस्कृतिक स्मृति के दस्तावेज हैं, जिन्होंने पीढ़ियों तक इस कथा को लोकमानस में सुरक्षित रखा है (राजपूत, 2019)।

रामलीला: नाट्य प्रदर्शन की परंपरा

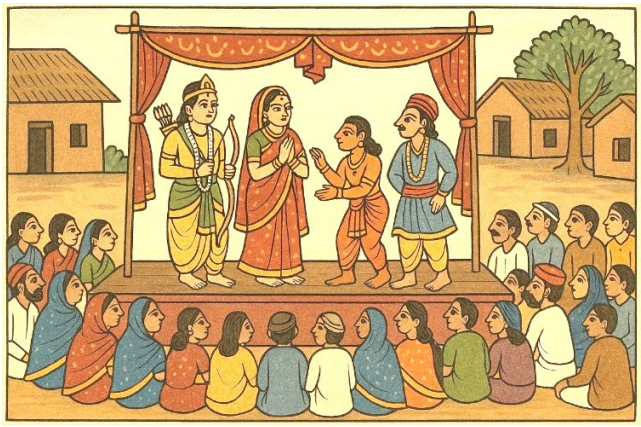

चित्र 2: ग्रामीण भारत में पारंपरिक रामलीला मंचन का दृश्य

[स्रोत: भारतीय संस्कृति पोर्टल, "रामलीला: रामायण का पारंपरिक मंचन", भारतीय संस्कृति मंत्रालय, 2022]

रामलीला भारतीय समाज में उस सांस्कृतिक चेतना का हिस्सा है, जो लोकभाषा, प्रतीकात्मक अभिनय और सामूहिक भागीदारी के माध्यम से रामकथा को जीवित रखती आई है। अयोध्या की गलियों से लेकर पूर्वांचल के गाँवों तक, काशी की परंपरा से लेकर दिल्ली के नगर मंचों तक, रामलीला ने हर वर्ग को एक साझा सांस्कृतिक मंच प्रदान किया है (भारत सरकार, 2022)। मंच पर साधारण वेशभूषा में प्रस्तुत पात्रों के संवाद, पंडालों में गूंजते लोकगीत, और दर्शकों की सहभागिता, इस नाट्य परंपरा को केवल प्रदर्शन नहीं रहने देते, वे इसे सामूहिक स्मृति और सामाजिक अनुभव में बदल देते हैं। आंकड़ों के अनुसार उत्तर प्रदेश, बिहार और मध्य प्रदेश में सबसे अधिक सक्रिय रामलीला मंच हैं, जहाँ वर्ष 2023 में लगभग 8,500 से अधिक मंचनों का आयोजन हुआ, जिनमें से 70 प्रतिशत आयोजन ग्रामीण क्षेत्रों में दर्ज किए गए (मनोहर, 2023)।

सारणी 2 : प्रमुख राज्यों में रामलीला आयोजनों का वितरण (2023)			
राज्य	**वर्ष 2023 के आयोजन**	**ग्रामीण क्षेत्र (%)**	**शहरी क्षेत्र (%)**
उत्तर प्रदेश	4,200	72%	28%
बिहार	2,300	68%	32%
मध्य प्रदेश	2,000	70%	30%

[स्रोत: मनोहर, 2023]

इन आँकड़ों से यह स्पष्ट होता है कि रामलीला की जड़ें अब भी ग्रामीण समाज में गहराई तक फैली हुई हैं, जहाँ यह केवल धार्मिक आस्था का विषय न होकर सामाजिक मेल-जोल, स्थानीय समस्याओं पर संवाद और सांस्कृतिक पहचान के रूप में देखी जाती है। दिल्ली जैसे महानगरों में आधुनिक मंच सज्जा और तकनीकी साधनों का प्रयोग बढ़ा है, वहीं अयोध्या और काशी में पारंपरिक स्वरूप यथावत है, जहाँ कलाकार और दर्शक के बीच औपचारिक सीमाएँ नहीं होतीं (इंडिया वाटर पोर्टल, 2019)। रामलीला की यह विशेषता इसे केवल कथा प्रस्तुति तक सीमित नहीं रहने देती, साथ में यह जीवन मूल्य, सामाजिक सरोकार और सांस्कृतिक धरोहर के रूप में निरंतर परिवर्तित होती रहती है।

6. पांडवानी, नौटंकी और भवाई में रामकथा के तत्व

छत्तीसगढ़ की पांडवानी, उत्तर भारत की नौटंकी और गुजरात की भवाई ऐसी लोकशैलियाँ हैं, जहाँ रामकथा सिर्फ धार्मिक कथा बनकर नहीं रहती। पांडवानी में जब गायक राम और सीता के वनवास या रावण वध की बातें करता है, तो उसकी बोली में गाँव की अपनी कहानी झलकती है। श्रोता राम को किसी दूर के देवता की तरह न मानकर अपने जैसा एक इंसान मानते हैं, जो संघर्ष करता है और जीतता भी है। नौटंकी में रामकथा के संवाद मजेदार अंदाज में बोले जाते हैं। गाँव के मेले में जब राम और रावण की लड़ाई होती है, तो बच्चे, बूढ़े सब तालियाँ बजाते हैं, क्योंकि भाषा उनकी होती है और कहानी में हास्य भी होता है। भवाई में रामकथा के पात्रों के जरिए गाँव के जुल्म, भेद भाव या भ्रष्टाचार पर ताना मारा जाता है। रावण अकेला राक्षस नहीं होता, वह समाज की बुराइयों का नाम बन जाता है (राजपूत, 2019)। पांडवानी, नौटंकी और भवाई में रामकथा के कई कार्यक्रम हुए हैं और जिससे इसकी सफलता का अनुमान काफी सटीकता से लगाया जा सकता हैं।

नीचे एक तालिका दी गई है जिसमें हम इसकी सफलता को बेहतरीन तरीके से समझ सकते हैं:

सारणी 3 : पांडवानी, नौटंकी और भवाई में रामकथा (2023)

सारणी 3 : पांडवानी, नौटंकी और भवाई में रामकथा (2023)		
लोक शैली	**कुल कार्यक्रम**	**रामकथा वाले कार्यक्रम**
पांडवानी	300	40
नौटंकी	500	100
भवाई	200	50

[स्रोत: (राजपूत, 2019)]

यह आंकड़े दिखाते हैं कि इन लोकनाट्य में रामकथा सिर्फ परंपरा निभाने के लिए नहीं होती। लोग इसे अपने समय, अपने सवालों और अपने अनुभव से जोड़ते हैं। हर प्रस्तुति में कुछ न कुछ ऐसा होता है, जो आज के समाज से जुड़ता है।

चित्रकला एवं पटचित्रों में रामकथा की दृश्यात्मक प्रस्तुति

रामकथा को केवल मौखिक परंपरा तक सीमित नहीं रखा गया। राजस्थान, हिमाचल प्रदेश और उत्तराखंड में लोगों ने इसे दीवारों, कपड़ों और पांडुलिपियों पर चित्रित किया। मेवाड़ की चित्रशैली में रामकथा के दृश्यों को बड़े पट्टों पर उकेरा जाता था, जिन्हें धार्मिक अवसरों पर गाँव के लोग देखते थे। ये चित्र कहानी कहने का माध्यम बने, जिन्हें बुजुर्ग बच्चों को समझाते थे (राजपूत, 2019)। मेवाड़ और कांगड़ा की चित्रकला में रामकथा के प्रसंगों का सूक्ष्म और सौंदर्यपूर्ण चित्रण, लोक-संस्कृति और धार्मिक भावना का अद्वितीय उदाहरण है (छाजेड़, 2016)। यह परंपरा दर्शाती है कि रामकथा ने दृश्य कला के माध्यम से भी जनमानस में अपनी जगह बनाई।

चित्र 3: मेवाड़ शैली में रामकथा का पारंपरिक चित्रण

[स्रोत: ब्रिटिश लाइब्रेरी संग्रह, "मेवाड़ रामायण से राम का स्वर्ग रोहण", विकिपीडिया कॉमर्स, 2019]

कांगड़ा की चित्रकला में रामकथा के दृश्य इतने बारीक और भावपूर्ण होते थे कि देखने वाला खुद को अयोध्या, चित्रकूट या लंका के किसी दृश्य में महसूस करता था। यहाँ राम और रावण के युद्ध से लेकर सीता की अग्निपरीक्षा तक के दृश्य बड़े धैर्य से बनाए जाते थे, ताकि हर भाव साफ दिखे। पहाड़ी इलाकों में छोटे मंदिरों की दीवारों पर भी रामकथा के प्रसंग देखे जा सकते हैं। यह केवल धार्मिक भावना दिखाने का तरीका नहीं था। क्योंकि उस समय जब पढ़ने की सुविधा नहीं थी, तब चित्र ही कथा को आगे बढ़ाने का काम करते थे (संध्या, 2023)। साल 2023 में जब पारंपरिक चित्रों का सर्वे किया गया, तब राजस्थान में 385, हिमाचल में 210 और उत्तराखंड में 120 चित्र सामने आए, जिनमें रामकथा के अलग-अलग हिस्से बने हुए थे ।

इन आंकड़ों से साफ होता है कि रामकथा केवल धार्मिक ग्रंथों या नाटकों तक सीमित नहीं रही। गाँव-गाँव में लोगों ने अपने हाथों से इस कथा को दीवारों और कपड़ों पर उतारकर अगली पीढ़ी तक पहुँचाया। आज भी कई घरों में पुराने पटचित्र मिलते हैं, जिन्हें देखकर लोग सिर्फ चित्र नहीं देखते, साथ ही अपने समाज और परंपरा से जुड़ाव महसूस करते हैं। ये चित्र यह बताते हैं कि कहानी कहने के लिए शब्द होना जरूरी नहीं, कभी-कभी रंग और रेखाएँ भी वही काम कर देती हैं।

7. लोक गायन एवं नृत्य शैलियों में रामकथा का संप्रेषण

जब गाँवों में रामकथा सुनाने का मौका आता था, तो लोकनायक ही सबसे बड़ा माध्यम बनते थे। पूर्वांचल, बिहार और मध्य भारत में कजरी, बिरहा और आल्हा जैसी लोकगीत शैलियों में रामकथा के प्रसंग रोजमर्रा की बोलियों में गाए जाते थे। खेतों में काम करते हुए, चौपाल पर बैठकों में या मेलों के दौरान लोग इन गीतों के जरिए कथा सुनते और समझते थे (सिंह, 2018)। राम का वनवास, सीता हरण या राम-रावण युद्ध जैसे प्रसंग इतने सहज ढंग से गाए जाते थे कि सुनने वाले को किसी लिखित ग्रंथ की जरूरत नहीं होती थी। इन गीतों में केवल भक्ति की बातें न होकर सामाजिक मुद्दे, रिश्तों की अहमियत और जीवन की सच्चाइयाँ भी जुड़ जाती थीं (Goswamy, 2023)। लोक गायक अपनी शैली में कथा को इस तरह गढ़ते थे कि हर बार सुनने पर कोई नई सीख मिलती थी।

दक्षिण भारत में कथकली और भरतनाट्यम जैसे नृत्य रूपों ने रामकथा को शब्दों के बिना लोगों तक पहुँचाया। कलाकारों के चेहरे के भाव, हाथों की मुद्राएँ और धीमे कदमों के जरिए पूरी कथा प्रस्तुत की जाती थी। केरला और तमिलनाडु के गाँवों में यह परंपरा आज भी कायम है, जहाँ धार्मिक आयोजनों में रामकथा के प्रसंग नृत्य के माध्यम से दिखाए जाते हैं (भारत सरकार, 2022)। दर्शकों को संवाद नहीं सुनना पड़ता था, क्योंकि रंग, भाव-भंगिमा और संगीत ही काफी था समझाने के लिए। असम और ओड़िशा में भी लोकनृत्य के दौरान गाए जाने वाले गीतों में रामकथा के हिस्से देखे जा सकते हैं (नारंग, 2023)। इन नृत्य शैलियों ने यह साबित किया कि कथा केवल शब्दों से नहीं, भावों और प्रतीकों से भी जनमानस तक पहुँचती है।

मध्य भारत और पूर्वोत्तर के गाँवों में महिलाएँ जब झूमर, ददरिया या पारंपरिक गीत गाती थीं, तो उनमें रामकथा के प्रसंग स्वाभाविक रूप से शामिल होते थे (संध्या, 2023)। त्योहारों, विवाह या खेतों में काम करते समय ये गीत वातावरण का हिस्सा बन जाते थे। गीतों में सीता की पीड़ा, राम का संघर्ष और भाईचारे के संदेश को सरल भाषा में पिरोया जाता था (राजपूत, 2019)। इन लोकगीतों ने बच्चों और युवाओं को बिना किताब के ही पूरी कथा से परिचित करा दिया। बुजुर्ग महिलाएँ इन गीतों के जरिए समाज की परंपराओं और मूल्यों को भी आगे बढ़ाती थीं। नृत्य और गायन की यह लोक परंपरा रामकथा को जीवन का हिस्सा बना देती थी, जहाँ हर पीढ़ी अपने तरीके से इस कथा को जीती थी।

8. आधुनिक मंचन, मीडिया और क्षेत्रीय विविधताएँ

समय के साथ रामकथा के मंचन में जिस तरह के बदलाव आए हैं, उसने इसकी पहुँच और रूप दोनों को बदल दिया है। पहले लोग गाँव के मैदान या मंदिर के प्रांगण में बैठकर कथा सुनते थे। अब शहरों में बड़ी-बड़ी इमारतों में, ऑडिटोरियम में और डिजिटल स्क्रीन पर वही कथा दिखाई जा रही है (मनोहर, 2023)। दिल्ली, मुंबई जैसे शहरों में एलईडी लाइट्स, साउंड इफेक्ट और पर्दे पर चलने वाले दृश्य आम हो गए हैं। पारंपरिक वेशभूषा की जगह डिजाइनर कपड़े और आधुनिक मंच सज्जा ने ले ली है। सोशल मीडिया और यूट्यूब ने भी रामकथा को नए दर्शकों तक पहुँचाया है। जहाँ पहले एक गाँव में सौ-दो सौ लोग कथा सुनते थे, अब एक डिजिटल मंचन को हजारों लोग एक साथ देख सकते हैं (Pragya, 2020)। इस बदलाव ने नए दर्शकों को जोड़ा, लेकिन यह भी चर्चा का विषय बना कि क्या तकनीक की चमक में लोक भावना कहीं खो तो नहीं रही।

भारत के अलग-अलग हिस्सों में रामकथा की प्रस्तुति वहाँ की भाषा, कला और सामाजिक सोच के अनुसार बदली है। तमिलनाडु में कंब रामायण को गीत और नृत्य में पिरोया जाता है (सिंह, 2022)। बंगाल में कृतिवासी रामायण के आधार पर गीतिनाट्य होता है। असम, मणिपुर और त्रिपुरा जैसे राज्यों में लोकनृत्य और वाद्ययंत्रों के साथ कथा सुनाई जाती है (नारंग, 2023)। गुजरात की भवाई में रामकथा के पात्रों के माध्यम से सामाजिक समस्याएँ उजागर की जाती हैं (राजपूत, 2019)। इन सभी रूपों ने यह साबित किया कि रामकथा हर क्षेत्र में अपनी पहचान के अनुसार ढल गई है। वर्ष 2023 में देशभर में आधुनिक मंचनों की संख्या बढ़ी।

इसी कारण रामकथा अब गाँव की चौपालों से निकलकर बड़े शहरों और ऑनलाइन प्लेटफॉर्म तक पहुँच गई है। तकनीक ने इसकी पहुँच तो बढ़ाई है, लेकिन इस चर्चा को भी जन्म दिया है कि क्या इन नए रूपों में वही आत्मीयता और सांस्कृतिक जड़ें बची हुई हैं, जो लोकमंचों पर देखने को मिलती थीं। आधुनिक मंचन और मीडिया ने रामकथा को नए दर्शकों तक पहुँचाया है। उदाहरण के लिए नीचे दी गई तस्वीर इस बात को काफी स्पष्टता से अभिव्यक्त करती हैं:

चित्र 4: डिजिटल मंचन में रामकथा की प्रस्तुति
[स्रोत: भारतीय संस्कृति मंत्रालय, 2023]

9. लोक प्रदर्शनकारी कलाओं के संरक्षण की चुनौतियाँ और संभावनाएँ

लोक प्रदर्शनकारी कलाएँ आज जिस दौर में हैं, उसमें उन्हें जारी रखना पहले जितना सहज नहीं रहा। गाँवों और कस्बों में जहाँ पहले रामलीला, नौटंकी, भवाई और पांडवानी जैसे आयोजन साल भर होते थे, अब वहाँ इनकी संख्या कम हो गई है। कलाकारों को सही मान-सम्मान और आर्थिक सहयोग न मिलने से कई पुराने समूह टूट चुके हैं (मनोहर, 2023)। युवा पीढ़ी इन परंपराओं से दूर होती जा रही है क्योंकि उन्हें लगता है कि ये पुराने ज़माने की चीजें हैं। दूसरी ओर, सिनेमा, टीवी और मोबाइल जैसे साधनों ने लोगों का ध्यान अपनी तरफ खींच लिया है। कई क्षेत्रों में पारंपरिक चित्रकला और पटचित्र बनना भी लगभग बंद हो गया है क्योंकि अब बाजार में छपे हुए पोस्टर और डिजिटल डिजाइन का चलन बढ़ गया है (रानी, 2020)। असम, गुजरात और छत्तीसगढ़ जैसे राज्यों में जहाँ कभी लोक गायन और नृत्य के जरिए रामकथा सुनाई जाती थी, वहाँ अब ऐसे कार्यक्रम कम ही देखने को मिलते हैं (राजपूत, 2019)।

इन मुश्किलों के बावजूद उम्मीदें बाकी हैं। कुछ गाँवों में आज भी लोग बिना किसी बड़े साधन के अपनी पुरानी परंपरा निभा रहे हैं। अयोध्या, मथुरा और वाराणसी जैसे स्थानों पर रामलीला की परंपरा को बचाने के लिए स्थानीय समितियाँ सक्रिय हैं (भारत सरकार, 2022)। कुछ कलाकार सोशल मीडिया का उपयोग करके अपने प्रदर्शन को दुनिया तक पहुँचा रहे हैं। स्कूल और कॉलेजों में अगर लोक कलाओं को पाठ्यक्रम का हिस्सा बनाया जाए तो बच्चों में इनकी समझ और रुचि बढ़ सकती है। राज्य सरकारें अगर समय पर सहायता दें और कलाकारों को मंच मिले तो यह परंपराएँ फिर से जीवित हो सकती हैं (रानी, 2009)। लोक प्रदर्शनकारी कलाएँ केवल मनोरंजन का साधन नहीं हैं, ये समाज की भाषा, सोच और पहचान को दर्शाती हैं। इन्हें बचाना केवल कलाकारों की जिम्मेदारी न होकर हर उस व्यक्ति की जिम्मेदारी है जो अपनी सांस्कृतिक जड़ों से जुड़ा रहना चाहता है।

10. निष्कर्ष और सुझाव

रामकथा और लोक प्रदर्शनकारी कलाएँ भारतीय समाज की सांस्कृतिक चेतना का अभिन्न अंग हैं। रामलीला, पांडवानी, नौटंकी, भवाई, चित्रकला और लोकनृत्य जैसी विधाओं ने रामकथा को केवल धार्मिक आख्यान से आगे बढ़ाकर सामाजिक संवाद का माध्यम बनाया। आधुनिक तकनीक और मीडिया के विस्तार से जहाँ इन परंपराओं की पहुँच बढ़ी है, वहीं लोक कलाओं की मूल आत्मा के संरक्षण की चुनौती भी सामने आई है। इन कलाओं के संरक्षण हेतु समाज को सक्रिय भूमिका निभानी होगी। शैक्षिक संस्थानों में लोककलाओं को पाठ्यक्रम में शामिल करना, कलाकारों को उचित मंच और आर्थिक सहायता प्रदान करना, तथा डिजिटल माध्यमों का रचनात्मक उपयोग करना आवश्यक है। स्थानीय समुदायों की सहभागिता और सरकारी प्रयासों के समन्वय से ही इन परंपराओं का जीवंत स्वरूप बनाए रखा जा सकता है। प्रत्येक राज्य को अपनी विशिष्ट लोककलाओं के प्रोत्साहन हेतु विशेष पहल करनी चाहिए। ये कलाएँ न केवल अतीत की धरोहर हैं बल्कि वर्तमान और भविष्य की सांस्कृतिक पहचान को भी आकार देती हैं, जिनका संरक्षण समय की मांग है।

संदर्भ सूची

Singh, Pradeep Kumar. (2017). रामकथा की चित्र परम्परा और दार्शनिक मन्तव्य. Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education, 14(1). 2230-7540. https://ignited.in/index.php/jasrae/article/download/7103/

Goswamy, B.N. (2023). Art N Soul: Unusual Retelling of the Epic of Ramayana. Sahapedia. https://www.sahapedia.org/art-n-soul-unusual-retelling-epic-ramayana

Pragya. D. (2020). रामकथा साहित्य की परम्परा एवं रामायण की आदिकाव्यता. International Journal of Sanskrit Research. https://www.anantaajournal.com/archives/2020/vol6issue6/PartC/6-6-44-957.pdf

नारंग, पूनम सैनी. (2023). मानस में श्रीराम का लोकनायक स्वरूप. अनहद कृति, 39, 2349-2791. https://www.anhadkriti.com/premlata-chaswal-essay-manas-mein-raam

इंडिया वाटर पोर्टल. (2019). प्रदेश के दृश्य चित्रकारों का कला एवं पर्यावरण में सार्थक योगदान. India Water Portal. https://hindi.indiawaterportal.org/books/

मनोहर, मुरली. (2023). रंगमंच और सिनेमा के प्रदर्शन माध्यमों के बदलते स्वरूप में दर्शक. अपनी माटी. https://www.apnimaati.com/2023/06/blog-post_55.html

राजपूत, मोनिका. (2019). मेवाड़ शैली में चित्रित अर्वा रामायण के चित्रों का विश्लेषणात्मक अध्ययन. डॉ. बी. आर. आंबेडकर विश्वविद्यालय, आगरा. https://shodhgangotri.inflibnet.ac.in/jspui/

सिंह, डॉ. योगेंद्र प्रताप. (2022). भारतीय भाषाओं में रामकथा, साक्षी, 20. https://upculture.up.nic.in/sites/default/files/documents/

रानी, डॉ. अर्चना. (2020). भारतीय चित्रकला में 'राम-विषयक' प्राचीन पाण्डुलिपियाँ. Indian Civilization through the Millennia, 110-111. https://www.researchgate.net/profile/Archana_Rani/publication/338630747

संध्या, मानसी. (2023). भारतीय चित्रकला में श्रीराम कथा का ऐतिहासिक एवं पारंपरिक महत्व. Shodhgangotri. https://shodhgangotri.inflibnet.ac.in/bitstream/20.500.14146/

सिंह, डॉ. नरेंद्र. (2018). लोक साहित्य में रामकथा. Review of Research. https://oldror.lbp.world/UploadedData/4216.pdf

रानी, अर्चना. (2009). राम-विषयक साहित्य से समृद्ध भारतीय चित्रकला. आजकल, 36, 36-37. https://www.researchgate.net/profile/Archana-Rani/

सिंह, डॉ. नीलम. (2018). लोक कला में रामकथा. Paripex – Indian Journal of Research, 7(2), 2250-1991. https://www.worldwidejournals.com/paripex/recent_issues_pdf

भारत सरकार. (2022). रामलीला, रामायण का पारंपरिक प्रदर्शन. भारतीय संस्कृति पोर्टल. https://indianculture.gov.in/hi/unesco/

छाजेड़, डॉ. अनुपमा. (2016). जैन रामायणों का साहित्य में योगदान. शब्द-ब्रह्म: भारतीय भाषाओं की अंतरराष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका, 5(1), 45. https://shabdbraham.com/ShabdB/archive/v5i1/sbd-v5-i1-sn9.pdf